



www.printo.it/pediatric-rheumatology/IN_HI/intro

कावासाकी रोग

के संस्करण 2016

2. नदान और इलाज

2.1 इसका नदान कैसे होता है ?

केडी एक नैदानिक या बैडसाइड नदान है। इसका मतलब यह है कि नदान केवल एक चिकित्सक द्वारा एक नैदानिक मूल्यांकन के आधार पर किया जाता है। एक निश्चित नदान बनाने के लिए 5 दिन का अस्पष्टीकृत तेज बुखार और नमिन् 5 में से कोई 4 विशेषताएं होना जरूरी है- द्विपक्षीय नेत्रश्लेष्मलाशोथ (यानी नेत्रगोलक कतर झलिली की सूजन), बड़े हुए लम्फ नोड्स, त्वचा पर लाल चकत्ते, मुंह और जीभ पर लाली और हाथ पैर में बदलाव। डॉक्टर को पुष्टि करनी होगी कि कोई अन्य बीमारी नहीं है जिसके लक्षण भी ऐसे ही हो सकते हैं। कुछ बच्चों में यह बीमारी अधूरे रूप में दिखाई देती है। इसका मतलब यह है कि वे कम नैदानिक मापदंड के साथ प्रस्तुत करते हैं। जिससे नदान बनाने में कठिनाई होती है। ऐसे मामलों को अधूरा केडी कहा जाता है।

2.2 यह बीमारी कतिनी लंबी चलेगी ?

केडी के तीन चरण हैं – तीव्र चरण जो कि पहले 2 हफ्ते चलता है जिसमें बुखार और अन्य लक्षण दिखाई देते हैं। उपतीव्र चरण – दूसरे से चौथे हफ्ते तक जिसमें प्लेटलेट काउंट वृद्धि होनी शुरू होती है और एन्यूरजिम दिखाई दे सकते हैं और वसूली चरण पहले से तीसरे महीने तक जिसमें सब बदले हुए प्रयोगशाला परीक्षण परिणाम सामान्य हो जाते हैं और कुछ रक्त वाहिकाओं की असामान्यताएं (जैसे हृदय धमनियों का एन्यूरजिम) सामान्य होने लगता है या पूर्णतया सही हो जाता है।

अगर इलाज नहीं करते हैं तो बीमारी खुद को 2 हफ्ते में सीमित कर लेती है और हृदय धमनियों में हुई क्षति वैसी ही रह जाती है।

2.3 परीक्षण का क्या महत्व है ?

वर्तमान में ऐसा कोई टेस्ट नहीं है जिससे इस बीमारी का निर्णायक नदान बन सके। कुछ टेस्ट जैसे बढ़ा हुआ ई.एस.आर., बढ़ा हुआ सी.आर.पी., श्वेतरक्त रक्त कोशिकाओं में वृद्धि,

अनीमिया (लाल रक्त कोशिकाओं में कमी) कम सीरम एलब्यूमिन और बढ़े हुए लीवर एंजाइम्स नदिान में मदद कर सकते हैं। प्लेटलेट्स की संख्या (कोशिकाएं जो रक्त के थक्के में शामिल होती हैं) आमतौर पर बीमारी के पहले हफ्ते में सामान्य होती हैं, परन्तु दूसरे हफ्ते में बढ़ने लगती हैं और बहुत ज्यादा हो जाती हैं।

बच्चों का समय-समय पर परीक्षण कराना चाहिए जब तक कि प्लेटलेट्स की संख्या और ई.एस.आर. सामान्य नहीं हो जाता।

एक प्रारंभिक इलेक्ट्रोकार्डिोग्राम (ई.सी.जी.) और इकोकार्डिोग्राम किया जाना चाहिए। इकोकार्डिोग्राम से कोरोनरी धमनियों का आकार का मूल्यांकन और उनका फैलना एवं एन्यूरजिम का पता लगा सकते हैं। जिन बच्चों की कोरोनरी धमनियों में असामान्यता पाई जाती है उनको अनुवर्ती इकोकार्डिोग्राम और अतिरिक्त अध्ययन और मूल्यांकन की जरूरत होगी।

2.4 क्या इसे पूरी तरह ठीक किया जा सकता है ?

केडी के ज्यादातर बच्चों को ठीक किया जा सकता है। हालांकि कुछ बच्चों में उचित उपचार के बावजूद भी दिल की जटिलताओं का विकास हो सकता है।

2.5 क्या-क्या इलाज होते हैं ?

निश्चित या संदिग्ध केडी के बच्चे को अवलोकन और निगरानी के लिए अस्पताल में भर्ती करना चाहिए और दिल की इनवोल्वमेंट के लिए मूल्यांकन करना चाहिए।

दिल की जटिलताओं को कम करने के लिए जल्दी से जल्दी इलाज शुरू करना चाहिए।

इलाज के लिए उच्च खुराक इम्युनोग्लोबुलिन और एसपीरिन दिया जाता है। इस इलाज से सूजन कम होगा और तीव्र लक्षणों में तुरन्त राहत मलिंगी। उच्च खुराक आई.वी.आई.जी. खुराक का मुख्य हिससा है क्योंकि इससे ज्यादातर मरीजों में कोरोनरी असामान्यताओं का खतरा कम हो जाता है। हालांकि यह महंगा इलाज है, परन्तु वर्तमान में यही सबसे प्रभावी इलाज है। विशेष जोखिम कारकों के साथ रोगियों में एक साथ कार्टिकोस्टीरोइडस भी दिया जा सकता है। रोगी जो कि आई.वी.आई.जी. की एक या दो खुराकों से ठीक ना हो, उनके लिए दूसरे उपचार के तरीके जैसे उच्च खुराक कोर्टिकोस्टीरोइडस या बायोलोजिक दवा से इलाज किया जा सकता है।

2.6 क्या आई.वी.आई.जी. से सब बच्चे ठीक हो जाते हैं ?

सौभाग्य से अधिकांश बच्चों को सिर्फ एक खुराक की आवश्यकता होगी। जिनको असर नहीं होता उनको आई.वी.आई.जी. की दूसरी खुराक या फिर कोर्टिकोस्टीरोइडस दिया जाता है। दुर्लभ मामलों में बायोलोजिक दवाईयां भी दी जा सकती हैं।

2.7 दवाई के क्या दुष्प्रभाव हैं ?

आई.वी.आई.जी. चकित्सा आमतौर पर सुरक्षित है और अच्छी तरह से सहन हो जाती है। शायद ही कभी, तंत्रिका की सूजन (एसेप्टिक मैनजिडिस) हो सकती है। आई.वी.आई.जी. के उपचार के बाद, जीना तनु टीकाकरण स्थगित कर दिया जाना चाहिए। (हर टीकाकरण के बारे में अपने बाल चकित्सक से परामर्श करें) एस्पेरिनि की ज्यादा खुराक से मतली या पेट खराब हो सकता है।

2.8 इम्यूनोग्लोबुलिन और उच्च खुराक एस्पेरिनि के बाद क्या उपचार दिया जाना चाहिए। इलाज कतिने समय तक चलेगा ?

बुखार उतरने के बाद (आमतौर पर 24-48 घंटे में) एस्पेरिनि की खुराक कम कर दी जाएगी। एस्पेरिनि की कम खुराक प्लेटलेट्स पर उसके प्रभाव के कारण दी जाती है। इसका मतलब है कि यह प्लेटलेट्स को एक दूसरे के साथ चपिकने से बचाती है। यह उपचार एन्यूरजिम के अन्दर और सूजन वाली रक्त धमनियों के अन्दर की सतह पर थरोम्बस (रक्त के थक्के) को बनने से रोकता है। थरोम्बस के बनने से उस रक्त वाहनि द्वारा दिये जाने वाले रक्त प्रवाह में रुकावट आ सकती है (जसिसे हृदय रोधगलन हो सकता है जोकि केडी की सबसे खतरनाक जटिलता होती है।) कम खुराक एस्पेरिनि इन्फ्लेमेटरी मार्कस के सामान्य हो जाने तक और फोलोअप ईको के सामान्य हो जाने तक दिया जाता है। जनि बच्चों को एन्यूरजिम लम्बे समय तक रहता है, उनको एस्पेरिनि या अन्य थक्का वरिधी दवाई डॉक्टर की देखरेख में लम्बे समय तक देनी होती है।

2.9 मेरा धर्म मुझे रक्त या रक्त उत्पादों का प्रयोग करने की अनुमति नहीं देता।

अपरंपरागत या पूरक चकित्सा के बारे में बताएं ?

इस रोग के लिए अपरंपरागत उपचार के लिए कोई जगह नहीं है। आई.वी.आई.जी. एक सद्धि उपचार है। कोर्टिकोस्टीरायड्स का इस्तेमाल प्रभावी हो सकता है यदि आई.वी.आई.जी. काम नहीं करता।

2.10 बच्चे की चकित्सा देखभाल में कौन शामिल है ?

बालरोग विशेषज्ञ, बाल हृदय रोग विशेषज्ञ और बाल चकित्सा रेह्यूमेटोलोजिस्ट, तीव्र चरण और अनुवर्ती में बच्चे का ख्याल रखेंगे। उन स्थानों पर जहां बाल चकित्सा रेह्यूमेटोलोजिस्ट उपलब्ध नहीं है, हृदयरोग विशेषज्ञ के साथ-साथ, बालरोग विशेषज्ञ बच्चे का ख्याल रखेंगे, विशेष रूप से उन बच्चों का जिनको तकलीफ है।

2.11 बीमारी का दीर्घकालिक विकास क्या होगा ?

ज्यादातर बच्चों में नदान उत्कृष्ट है। यह बच्चे सामान्य जीवन जीते हैं और इनकी वृद्धि और विकास भी सामान्य होता है।

कोरोनरी धमनियों में असामान्यताओं के रहने की स्थिति में रोग का नदान मुख्य रूप से संबहनी संकुचन और अवरोधों के विकास पर निर्भर करता है। इन बच्चों को प्रारंभिक जीवन में दलित के लक्षण होने का खतरा होता है और इन्हें लम्बी अवधि के लिए एक हृदय रोग

वशिषज्ज जोकि केडी के बच्चों को लंबी अवधि की देखभाल में अनुभव रखता है, की देखरेख में रहना पड़ सकता है।